Naveen Shodh Sansar (An International Refereed / Peer Review Multidisciplinary Research Journal)
RNI No.- MPHIN/2013/60638, ISSN 2320-8767, E- ISSN 2394-3793, Scientific Journal Impact Factor (SJIF)- 8.054,
July to September 2024, E-Journal, Vol. I, Issue XLVII, ISO 9001:2015 - E2024049304 (QMS)

भारतीय राष्ट्रीय आंदोलन और समाचार पत्र

हरीश*

* एम ए, नेट -जेआरफ (इतिहास) कोडुका पोस्ट रिछोली, ब्लॉक पाटोदी बालोतरा (राज.) भारत

प्रस्तावना – 19 वी सदी में भारत में मध्यम वर्ग का उदय हुआ। मध्यम वर्ग के अधिकांश लोग शिक्षा प्राप्त करने यूरोपीय देशों में गए थे। विदेशों में शिक्षा प्राप्त करने गए लोगों पर पश्चिम की सभ्यता और संस्कृति का प्रभाव पड़ा। ये पश्चिम से स्वतंत्रता, समानता, बंधुत्व जैसे मूल्य लेकर भारत लौटे। पश्चिम से शिक्षा प्राप्त करके भारत लौटे ये लोग अपने विचारों के प्रचार – प्रसार के सभी तरीको से परिचित थे, जिनके दुवारा उनके विचारों का प्रचार प्रसार किया जा सके। भारत में पुर्तगालियों ने छापेखाने की स्थापना की थी जिससे भारत में प्रिंटिग प्रेस का विकास हुआ। प्लासी की विजय के बाद अंग्रेजो ने भारत में पैर पसारने शुरू कर दिए थे तथा 19 वी शताब्दी तक ब्रिटिश साम्राज्य ने स्थायित्व प्राप्त कर लिया था।सम्पूर्ण बंगाल में अंग्रेजो ने अपना प्रशासन लागु कर दिया था। इस दौरान अंग्रेजों ने भारतीयों पर विभिन्न प्रकार के अत्याचार किए। ब्रिटिश आर्थिक नीतियों के कारण भारत का सूती वस्त्र उद्योग समाप्त हो गया। भारत में खाद्यानों की कमी हो गई अंग्रेजों ने व्यापारिक फसलों को ज्यादा महत्त्व प्रदान किया। कांग्रेस की स्थापना से पूर्व ऐसा कोई राजनीतिक संगठन नहीं था जो आम जनता की समस्या को ब्रिटिश साम्राज्य के समक्ष रख सके। ऐसी दशा में समाचार पत्र एक ऐसा माध्यम था जिनसे आमजन की समस्या का मुद्दा उठाया जा सके ।

भारत में समाचार पत्र की शुरुवात जेम्स आगस्टस हिक्की के 1780 ई. में प्रकाशित बंगाल गजट से मानी जाती है इसमें कम्पनी के प्रशासन की आलोचना की गई थी किन्तु हिक्की की मौत के बाद समाचार पत्र भी बंद हो गया। इसके बाद जेम्स सिल्क बंकिघम ने कलकत्ता जर्नल की स्थापना की जिसने अपने लेखों में सरकारी गलतियों की खुलकर आलोचना की गई। यह अखबार न केवल यूरोप में बल्कि भारतीयों में लोकप्रिय हुआ। इसकी खुली आलोचना से ऐडम बली, लार्ड हेस्टिंग इत्यादि नाराज हो गए थे।

भारत में गंगाधर भटाचार्य ऐसे प्रथम भारतीय व्यक्ति थे जिन्होंने 1816ई. में कलकत्ता में बंगाल गजट निकाला था।यह अखबार लम्बे समय तक नहीं चला था। भारतीय भाषाओ में समाचार पत्र निकलने की वास्तविक शुरुवात बंगाली भाषा के दिग्दर्शन से मानी जाती है यह पत्र अंग्रेजी और बंगाली दोनों में छपता था।

प्रारम्भिक दौर में ये समाचार पत्र कुछ ही लोगों तक सीमित थे। समाज का बहुत बड़ा वर्ग इनसे अछूता रहा था समाचार पत्रों के लिए कोई नियम भी नहीं थे अंग्रेज अपनी मर्जी के अनुसार इनको कभी भी बंद कर सकते थे । 1857 ई. में भारतीय जनता का पहली बार असंतोष सामने आया और उन्होंने ब्रिटिश साम्राज्य की नीव हिला दी।1857 की क्रांति के बाद भारत में विभिन्न भाषाओ में समाचार पत्र छपने लगे जिसमें ब्रिटिश साम्राज्य की खुलकर आलोचना की जाने लगे तथा जनसाधारण को अंग्रेजों से लड़ने के लिए तैयार किया जाने लगा। इस समय के समाचार पत्र व्यापारिक लाभ के लिए नहीं बल्कि लोगों में राष्ट्रीयता की भावना का प्रचार प्रसार के लिए काम कर कर रहे थे।

ब्रिटिश सरकार ने समय समय पर इन समाचार पत्रों पर नियंत्रण स्थापित करने के लिए अनेक कानून लागु किए सर्वप्रथम वेल्जली 1799 में समाचार पत्रों का पत्रेक्षण अधिनियम पारित किया जिसके अंर्तगत समाचार पत्र को सम्पादक, मुद्रक, और स्वामी का नाम छापना पड़ता था और नियमों का पालन नहीं करने पर तुरंत दंड दिया जाता था।1823 में जान ऐडम्स ने इन नियमों को और कठोर किया तथा मुद्रक और प्रकाशक को मुद्रणालय स्थापित करने के लिए अनुज्ञपति लेना अनिवार्य किया। विलियम बेंटिक के कार्यकाल में समाचार पत्रों के प्रति उदारवादी रुख अपनाया गया चालर्स मेटकाफ ने 1823 के नियम को रद्द कर दिया इस कारण उसको भारतीय समाचार पत्रों का मुक्तिदाता कहा गया।

1857 की क्रांति के बाद शासको और शासितों के बीच संबंधो में कटुता आ गई थी।1876–77 में भयंकर अकाल पड़ा था इसके बावजूद 1877 में दिल्ली दरबार का आयोजन किया गया जिसमें भारी मात्रा में धनराशि खर्च की गई एक तरफ भारतीय भूख के कारण मर रहे थी वही दूसरी और अंग्रेज पानी की तरह दिल्ली दरबार में पैसा बहा रहे थे। अंग्रेजों के इस कार्य की भारतीय समाचार पत्रों में भयंकर आलोचना की गई। इस समय भारत में लिटन गर्वनर जनरल था उसने देशी भाषा समाचार पत्र अधिनियम पारित किया। इसके अंतर्गत सोमप्रकाश, भारत मिहिर, ढाका प्रकाश, सहचर इत्यादि समाचार पत्रों के विरुद्ध मामले दर्ज किए गए। घोष बंधुओ का अमृत बाजार पत्रिका रातों रात इस ऐक्ट से बचने के लिए अंग्रेजी भाषा में परवर्तित हो गया। बाद में रिपन ने इस अधिनियम को समाप्त कर दिया था। भारत में ऐसे क्रन्तिकारी नेता हुए जिन्होंने अपने समाचार पत्रों के माध्यम से आम जन में राष्ट्रीय चेतना का प्रचार प्रसार किया इनमें बाल गंगाधर तिलक का नाम सबसे प्रमुख है इन्होंने मराठा और केसरी नामक समाचार पत्र चलाए। यह पहले ऐसे राष्ट्रीय आंदोलन के नायक थे जिनको पत्रकारिता के कारण जेल जाना पड़ा था।

तिलक के समान ही सुरेंद्र नाथ बनर्जी ने अपने समाचार पत्र बंगाली में अदालत की अवमानना और हड़ताल के संबंध में टिपणिया की तो उनको गिरफ्तार कर लिया गया।

गणेश शंकर विद्यार्थी के समाचार पत्र प्रताप ने बिजौलिया किसान आंदोलन को राष्ट्रीय स्तर पर प्रचार प्रसार किया और राष्ट्रीय स्तर का मुद्दा बना दिया इस प्रकार बिजौलिया किसान आंदोलन सम्पूर्ण राष्ट्र में चर्चा का विषय बन गया।

अन्य समाचार पत्रों में कृष्णकुमार की संजीवनी, काल, अरविन्द का वन्दे मातरम, ऐनी बेसंट का कॉमनवील, नया इंडिया, उस समय प्रसिद्ध समाचार पत्रों में संवाद् कौमुदी, बाम्बे समाचार (1882), बंगदुत (1831), गस्तगुफ्तार (1851), अम तबजार पत्रिका (1868), ट्रिब्यून (1877), इण्डियन मिरर, हिन्दू, पौट्रियाट, बंगलौर, सोमप्रकाश, कामरेड, न्यु इण्डियन केसरी, आर्य दर्शन एवं बन्धवा आदि के नाम विशेष रूप से उल्लेखनीय हैं।

इन समाचार पत्रों में लोगों में जागरूकता पैदा करने में मुख्य भूमिका निभाई तथा अंग्रेजों दुवारा भारतीयों पर किए जा रहे अत्याचार का खुलकर विरोध किया। ब्रिटिश सरकार ने अनेक प्रशासनिक नीतिया अपनाई जिनका एकमात्र उद्देश्य भारतीयों का शोषण करना था इन नीतियों की खुलकर आलोचना और समय समय पर अनेक प्रेस से संबंधित अधिनियम पारित करके समाचार पत्रों पर नियंत्रण स्थापित करने का प्रयास किया। इन समाचार पत्रों ने राष्ट्रवादी नेताओं और कवियों को एक ऐसा मंच प्रदान किया जिससे ये अपने विचारों को आमजन तक पंहुचा पाए और आमजन को अंग्रेजों के विरुद्ध संघर्ष करने के लिए तैयार कर पाए इस प्रकार भारतीय राष्ट्रीय आंदोलन में इन समाचार पत्रों का महत्वपूर्ण योगदान रहा।

संदर्भ ग्रंथ सूची :-

1. ग्रोवर, यशपाल, आधुनिक भारत का इतिहास नवीन मूल्यांकन, एस चंद एण्ड कम्पनी 2000, नई दिल्ली।
2. सरकार सुमित, आधुनिक भारत 1885-1947, राजकमल प्रकाशन 2018,नई दिल्ली।
3. चंद्र विपिन, त्रिपाठी अमलेश,स्वतंत्रता संग्राम, नेशनल बुक ट्रस्ट इण्डिया 2003, नई दिल्ली।
4. ताराचंद, भारतीय स्वतंत्रता आंदोलन का इतिहास, सुचना और प्रसारण मंत्रालय भारत सरकार 1997
5. चंद्र विपिन प्रभूति, भारत का स्वतंत्रता संघर्ष, हिंदी माध्यम कार्यान्वय निदेशालय, दिल्ली विश्वविद्यालय।

****